श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

श्री धानुका सावा शक्ति प्रचार समिती (मुंबई)

दादीजी के मंगलपाठ की महिमा का गीत

लोटरी लग जायेगी, किस्मत खुल जायेगी।
करो मन से मंगलपाठ, तो दुनिया बदल जायेगी।

क्युं फिरतां तुं मारा मारा, होकर के बेहाल
भाव से मंगल माँ को सुना, कर देगी माला–माल
प्रार्थना रंग लायेगी, ये झोली भर जायेगी... करो मन से

जैसे भागवतजी के अंदर, खुद बैठे है कन्हैया
वैसे ही मंगल के अंदर, बैठी है मेरी मैया
तिजोरी भर जायेगी, तेरे भी घर आयेगी... करो मन से

वार, तिथि, मुर्हुत मत देखो, जब भी समय हो गालो
मंगल ही गंगा जमुना है, माथे इसे लगा लो
शनि, राहु, केतु, ये दुर भगाऐगी... करो मन से

मंगल पढने में हमसे, शायद गल्ती हो जाये
या कामकाज के कारण, कोई भुलचुक हो जाये
अंबरीश जयकार लगा, गल्तीयाँ भुलायेगी... करो मन से

(मंगल पाठ मंगलाचरण से प्रारम्भ करें)

मंगलाचरण

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।

।। श्री गुरू वंदना ।।

ब्रह्मानंदं परं सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वंन्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्षम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वादिसाक्षीभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तंनमामी ।।

।। श्री सरस्वती वंदना ।।

वीणाधरे विपुलमंगल दानशीले
भक्तार्ति नाशिनी विरंचि हरीश वन्दे ।
कीर्तिप्रदेखिल मनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनी सरस्वती नौमि नित्यम् ।।

।। श्री हनुमत वंदना ।।

मनोजवं मारूततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीरामदूत शरणं प्रपद्ये ।।

।। श्री सावा वंदना ।।

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातने ।
गुणाश्रये गुणमये सावा शक्ति नमोऽस्तुते ।।
सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: प्रथम स्कंध :

दिव्य रूपाश्चः महामाया शक्ति मंगलकारिणी
सुख सौभाग्य दात्रीच सावा दैव्यै नमो नमः

: भाषा टीका :

दिव्य रूपमयी, दिव्य रूप देने वाली, महामाया
सावा शक्ति मंगल करने वाली, सुख और सौभाग्य
देनेवाली सावा देवी को बारंबार प्रणाम है ।।

: दोहा :

श्री गणेश रिद्धि सिद्धि सहित, लक्ष्मी मात प्रणाम ।
सावा शक्ति को नमन है, दादी सुख की धाम ।।१।।

रामचंद्र सीताजी के, धरुं चरण में शीश ।
सालासर हनुमानजी, दिजिये शुभ आशिष ।।२।।

कुलदेवी शाकंबरी माँ, अग्रसेन महाराज ।
शारद सतवाणी दे ब्रह्मा, हरी शिव संत समाज ।।३।।

योगेश्वर श्री कृष्णचंद्र, राधा पद अनुराग ।
भग्त जान किरपा करो, सुप्त जगावो भाग ।।४।।

शीश नवावू बुद्धगिरी, बाबा लक्ष्मीनाथ ।
स्वीकारो आदेश थे, औधड़ अमृत नाथ ।।५।।

चांद सूरज शुभ धरती माँ, सबही करो सहाय ।
ब्यास बाल्मिक नारद तुलसी, आशिष दो हरसाय ।।६।।

ग्राम देव कुल देवता, पीतृ देव सरकार ।
चरण नवू माता पिता के। पायो जीव निखार ।।७।।

मन प्रशन्न कर चाव से, होकर भाव विभोर ।
सावा सति मंगल पढ़े, सुख बरषे चहुं और ।।८।।

शुभ करे कल्याण करे, हो आरोग्य धन धामी ।
शत्रू बुद्धि विनाश करे, दीपक ज्योति नमामी ।।९।।

नित्य नया सत्कर्म हो, नित उठ करुं प्रणाम ।
सावा शक्ति महर से, जहां रहुं सुख धाम ।।१०।।

चौपाई

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
जय जय सावा शक्ति माता । करु प्रणाम सकल सुख दाता ।।
सत् से सत्यदेव सब साजे । परम ईश के शीश विराजे ।।
सत्य मुकुट बन मस्तक चमके । तीन लोक मे सत्य ही दमके ।।
चौमुख दीपक सत्की ज्योती । हरी ब्रह्मा के मन का मोती ।।
सत् से शिवजी शिखर चढ गये । सब देवो से आगे बढ गये ।।
शिवा लक्ष्मी ब्रह्माणी सत् पर । सारी सतियां सत् के रथ पर ।।
सत्य बना अमृत का प्याला । सत्य करे अग जग उजियाला ।।

सावा सती के चरणो में, नित्य करुं प्रणाम ।
धन बल बुद्धि सिद्धियां, दिजिये मां सुखधाम ।।११।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शेखावाटी सत् की धरती । बहुस्नेह सब सतियां करती ।।

राजस्थान मे सदा विचरती । भक्त जनन की रक्षा करती ।।
करमा मीरा जैसी भक्ति । जीणमात शाकम्बरी शक्ति ।।
माता सती नाम अति पावन । सावा मंगल पाठ सुहावन ।।
सावा मंगल सुखद अपारा । गावही सुनही होत भव पारा ।।
मंगल मूर्ति मंगल ज्योती । जिस पर तेरी ममता होती ।।
वो सेवक अति है बड़ भागी । जो सावा सती पद अनुरागी ।।

श्री सावा शक्ति मैया, चिर आनन्द स्वरूप ।
काज सवाँरे भग्तों के, माता रूप अनूप ।।१२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
मन से शरणागत हो जाता । मनवांछित फल निश्चय पाता ।।
कथा सरित तव विमल प्रीतिकर । मंगलपाठ तिहारो घर घर ।।
सावा सतीका चरित है प्यारा । सहज कामना पूरन वारा ।।
मन की खटपट सभी मिटावो । सावा सती का मंगल गावो ।।
कुटुम्ब स्नेही पोता पोती । घर मे अनधन माणक मोती ।।
लक्ष्मी करदे माला माल । माता सबको करें निहाल ।।
रूके हुए सब कारज सारे । आगे का भी संकट टारे ।।

मंगलमयी ममतामयी, मैया का धर ध्यान ।
सावा शक्ति मंगल का, करो नित्य गुण ज्ञान ।।१३।।

भारत राजस्थान के, सरहद में एक गांव ।
सभी सुखी परिवार थे, लेते प्रभू का नांव ।।१४।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शहर फतेहपुर नाम बताया । मरूधर के इतिहास मे आया ।।

कैर खेजड़ी बालू धोरा । चहके पक्षी नांचै मोरा ।।
क्षत्री विप्र वैश्य और शूदर । निर्मल मनही कुटिल ना उदर ।।
गुरू जन विद्यादान करंता । शूरवीर सब आन भरंता ।।
सब सम्मानित अग्रवाल गर । अग्रसेन उजियाल भानुकर ।।
सभी लोग सत्कर्म कमाते । पर सेवा से नही अघाते ।।
भरे साख ब्रह्मांड समुचा । गली गांव हर कूंचा कूंचा ।।

फतेहपुर में पारखी, सत् गुण सम इन्सान ।
अग्रवाल गर गोत्र था, कृपा करही भगवान ।।१५।।

पती परायणा गृह लक्ष्मी, उमदा देवी नाम ।
गृहस्थी धर्म निभावती, भजती हर को नाम ।।१६।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
अपने गांव में रहते सुख से । विचलित थे छोट से दुःख से ।।
बिन सन्तान उदासी छाई । करें प्रार्थना मन में आई ।।
हिंग्लाज मां के मंदिर में । करी वंदना आरत स्वर में ।।
हिंग्लाज मां मंड में राजी । शंक घड़ावल नोपद बाजी ।।
प्रगट भयी माता आनंद से । बोली उमदा पारखचंद से ।।
नया रूप प्रगटावूंगी में । सावा सती कहावूंगी में ।।
मेरी शक्ति वास करेगी । पूर्ण सभी की आस करेगी ।।
होगई अंतर्ध्यान भवानी । पुर इतिहास की सत्य कहानी ।।
गर्भवती हुई उनकी नारी । पारखचन्द ने भली विचारी ।।

अपने ग्यान का आदर करते । जो कहते वो सच्चा कहते ।।
पारखचंद और उमदा बाई । दोनों के मन खुशियां छाई ।।
संवत सोलह सो सतावन । दिवस बसंत पंचमी पावन ।।
आश्रय जन्म हुवा अभिमत के । खेल निराले है सब सत् के ।।

माघ सुदि शुभ पंचमी, दिन था मंगलवार ।
मध्य निशा में जन्म हुवा, छाई खुशी अपार ।।१७।।

फूलों की वर्षा हुई, हो गये सभी निहाल ।
मात पिता के घर मांही, बाजे मंगल थाल ।।१८।।

छन्द

जय जय पारस जय जय सावा शक्ति मां दुख टारिणी
जय जय ज्योति आदि शक्ति दुर्गा दुष्ट संहारिणी

भाल सुशोभित रोली अक्षत खड़ग त्रिशूलं धारिणी
लाल चूनड़ी चमक चहू दिशि पायल नूपूर बाजिणी

आरती मणिमय मंदिर में नित घनन घड़ावल गाजिणी
श्री फल भेंट धरे सत् व्यंजन माता सिंह सवारिणी

करूणामयी करूणाकर मैया करो कृपा दु:ख मोचिणी
मैया पार करो मेरी नैया अमल कमल दल लोचिनी

किन्नर गावत सुरगण ध्यावत माता विघ्न विडारिणी
शक्ति शरणं पुनि पुनि नमनं सावा मंगल कारिणी

जब जब जन्म दिवस आयेगा प्रगटेगी मेरी मैंया
भगत बधावा गासी सखियां गावेगी बधैया...

भगत बधाई बाँटे किसीको न कोई नाटे
नाच रही खुशियां आंगण में
पाई न बधाई वो तो करी न कमाई
कोई मत शरमाना मांगण में
लाज शरम सब छोड़के नाचो, नाचो ताता थैया...

गली गली भवन भुवन सब सज रहे
बज रहे बाजे मंगल में
चित मांही चाव होवे मन मे उछाव होवे
आनंद बरसे पल पल में
तोपां छुटे नील गगन में, गूंजेगी शहनाईयां...

चन्द्रमां सा रूप सोहे मुख की लल्लाई मोहे
काजल तिलक ललाटन मे
दर्श पर्श पावूं वारी बलिहारी जावूं
खुशी होवे खुशियां बाँटन में
"मंगल" नजर उतार लेवुं में, सौ सौ बार बलैंया...

:: दोहा ::

भाव सहित जो भी पढे, यह पहला सौपान ।
निश्चय गोद भरे मंगल, हो विश्वासी मान ।।१९।।

- : इति प्रथम स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: द्वितीय स्कंध :

शुभा संकल्प सिद्धा: कामाख्या कुल तारिणी
सौभाग्य ज्योति रूपा सावा शक्ति नमोऽस्तुते ।।

: भाषा टीका :

शुभ फल देनेवाली संकल्पों को सिद्ध करने वाली कामाख्या रूपा भगवती कुल को तारनेवाली सौभाग्य प्रदान करने वाली, ज्योति स्वरूप श्री सावा शक्ति मैया को बारंबार नमस्कार है ।

भाव शरीर से चलो सभी, चाव सहित जय बोल ।
जहां जननी की गोद में, कन्या रतन अमोल ।।१।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
जोशी पंडित लिया बुलाई । चूड़ा करण रश्म करवाई ।।
पंडित पंचागी बल बोले । भेद योग ग्रहों का खोले ।।
पारस देवी नाम बताया । आगे का भविष्य समझाया ।।
आंगन शुभ घर महकायेगी । सुगंध सत्‌की जग छायेगी ।।
कीरती कुल की फैलायेगी । परम यशस्वी वर पायेगी ।।
चूनड़ी से इसका है नाता । ग्रह नक्षत्र कहत विधाता ।।
जैसा रीत नेग सब किन्हे । लेय दक्षिणा द्विज जल दीन्हे ।।

श्री जननी की गोद में, सारे सब का काम ।
बाल रूप पारसदेवी को , करीये सभी प्रणाम ।।२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
बाल अवस्था पारस पागई । थोड़े दिन में शिक्षा आगई ।।
कछुक दिवश पहले ही देखा । चमत्कार एक हुआ अनोखा ।।
महल अटारी धरती सारस । जित देखे उत पारस पारस ।।
मां के मनमे चिन्ता छाई । पारस के कोई है नही भाई ।।
वंश बढेगा केही विधि आगे । कौन बंधावे राखी धागे ।।
दुनिया ताना देवण लागी । पारस की सुरतां जब जागी ।।
पारस ने पहिचान लिया है । मां का दुखड़ा जान लिया है ।।

निजकुल पे किरपाकरी, दिन्हो वंश बढाय ।
पुत्र रतन धन दे दिया, श्री सावा मेरी माय ।।३।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
मेहन्दी का कर लिया बहाना । हाथो मे शुभ चिन्ह दिखाना ।।
दोनो हाथो में दिख लाया । स्वस्तिक और त्रिशूल दिखाया ।।
बड़ी पारस एक छोटा भाई । सांची प्रीत कही नही जाई ।।
बहिन भाई का प्रेम अपारा । प्रेम ही सत्यलोक की धारा ।।
बाल अवस्था खेल हो गया । तरूणाई से मेल हो गया ।।
वर्षा ऋतु और सावन आया । सिनारा का उत्सव छाया ।।
मौसम तीज त्योहार सुहाना । झूलन प्यारा लगे झुलाना ।।

झूले झूला पारस सावा, रिम झिम है बरसात ।
झूला झूलावे सहेलियां, झूलन की क्या बात ।।४।।

: झूला गीत :

झूला झूले पारस सावा सखि सहेली साथ
झूला झूलण री रूत आई ऽऽऽ झूला...

मोर पपीहा बोले बागां मे कोयल काली
पारस झूला झूलें उमरीयां है बाली
बरसे हां बरसे सुहनीसी बरसात, झूला...

लूभा रही है मन को ये हरि हरि हरियाली
पारस को सब निरखै झूमे है डाली डाली
झूमे मन झूमे हवा से करे बात, झूला...

झूले पे है सावा संग सखियों की टोली
कोई ग्यान पिटारी खोली कोई 'मंगल' करे ठिठोली
हरसे मन हरसे हो पहली मुलाकात, झूला...

:: दोहा ::

सावन पूर्ण होत ही, राखि का त्योहार ।
प्रेम से राखि बांधे बहिना, प्रेम है जीवन सार ।।५।।

सावन महिना आया राखि का त्योहार ।
बहिन भाई के राखि बांधे मनमे खुशी अपार ।।
पावन पर्व है रक्षा बंधन, भारत की महिमा का चंदन
शगुन मना भाई के मुख मै मिठाई डार, बहिन...
तिलक लगा के श्री फल देवे, बहिन भाई की बलैया लेवे
उमर हजारी मांगे वो आरती उतार, बहिन...

समय चक्र चलता सदा, रैन दिवस रहे बीत ।
झूलत खेलत पारस का, बचपन हुआ व्यतीत ।।६।।

मन पंछी उड़ चल वहां, देखो नगर खुशाल ।
पारस सावा का जहां, सुन्दर शुभ ससुराल ।।७।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शेखावाटी मे वो रहते । नगर शेठ नगरी के कहते ।।
भोलाराम सदा शुभनाम । रतनगढ है जग सरनाम ।।
धीरवान शेठाणी उनकी । दया धर्म दातारी धुनकी ।।
बेटा उनका चतुर सुजानी । सुघड़ सलोना नही गुमानी ।।
मात पिता भ्रातादिक सारे । सगे सम्बंधी सभी सुप्यारे ।।
मालिक की माया है भारी । जान सकत कोई तपधारी ।।
साधु का सम्मान करेगा । मंगल निश्चय मोद भरेगा ।।

सावा पारस की लीला से, भरा पूरा स्कंध ।
परिवारिक जीवन से जोड़े, छुटे व्यर्थ समंध ।।८।।

-: इति द्वितीय स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है । श्री बाकें बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: तृतीय स्कंध :

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधात्वं लोक पावनी
संध्या रात्री: प्रभा भूर्ति मेघा श्रद्धा सरस्वती

: भाषा टीका :

हे देवी ! तुम सिद्धि हो स्वधा हो और तुमही स्वाहा हो। अमृतमयी और तीनो लोको को पवित्र करनेवाली हो हे माता। तुम ही संध्या हो रात्री प्रभा विभूति मेघा और सरस्वती हो हम सब तुम्हे नमस्कार करते है ।।

जैसे सुदी का चन्द्रमा, नित नित बढता जाय ।
पारस सावा बढ रही, मां पितु के मन भाय ।।१।।

सोमवार सोलह किया, सावा ने व्रत राख ।
मनोकामना पूर्ण हो, शिवगोरी की साख ।।२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शिव पूजा कर पारस बाई । मात पिता से आशिष पाई ।।
आपस मे मां पितु बतियाई । पारस की अब करे सगाई ।।
पंडित नाई को भिजवाये । समाचार शुभ वो नही लाये ।।
उनके लायक वर नही पाया । सुन दम्पती मन चिंता लाया ।।
चिन्तित रात बीत गई सारी । चिन्ता हरली पारस प्यारी ।।
पारस ने शुभ स्वप्न सुनाया । वर के घर का पता बताया ।।
दोनो के मन खुशियां छाई । जोशी नाई पुनः पठाई ।।

स्वर्ण अशर्फि लेयके, पहुँचे उनके द्वार ।
साावा के ससुराल मे, छाई ख़ुशी अपार ।।३।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
जोशीजी और नाई आये । पारस के घर का गुण गाये ।।
मात पिता और परिजन साने । सावा के गुण बहुत बखानें ।।
जब वो सबकी स्वीकृति पाई । श्रीफल दीन्हा तिलक लगाई ।।
सब ही ह्रदयमें ख़ुशियां छाई । अभिजित मुहुर्त मे हुई सगाई ।।
सबके मन मुस्कान बिराजी । हो गया सबका मनवा राजी ।।
बिदा हुए वो पत्री लेकर । दोनो पहुंचे पारस के घर ।।

समाचार सब कहदिये, दीन्ही पत्रि थमाय ।
मात पिता भी खुश हुए, सबको बांच सुणाय ।।४।।

कई बार बांची चांव से, पाती परम पुनीत ।
पारस की माँ सुन करके, शुभारंभ की रीत ।।५।।

पत्री मे यह लिखा हुवा, लगन योग के साथ ।
मंगसिर बदि आठम कि शादी, सावो लेवो हाथ ।।६।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
ध्यान गजानन का सब कीजे । हो प्रशंन सब कारज कीये ।।
विवाह हेतु डोरी कर लीजे । सबही मंगल अमृत पीजे ।।
परिजन मन आनंद समाये । समधी दोनो भवन सजाये ।।
रंग रोगन से घर चमकाये । मुख्य द्वार चित्रित करवाये ।।
कुम कुम पत्री लिखवाई है । रणथम्बोर भिजवाई है ।।

प्रिय जन सगे सम्बधी भाई । सबको पत्रिका पहुँचाई ।।
भात न्यूतन कि रश्म निभाई । बहिन भाई के तिलक लगाई ।।

कुटुम्ब स्नेही लाईयो, आईयो सब मिल साथ ।
पारस सब की लाडली, शगुन भरा हो भात ।।७।।

गीत भात न्यतन का

बीरा म्हाँरे रिमक झिमक भत्ती आज्यो
थे आज्यो रिद्ध सिद्ध ल्याज्यो जी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे थे आज्यो भावज ल्याज्यो
संग लाल भतिजो गोदी ल्याज्योजी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे माथै नै मैमद ल्याज्यो
म्हाँरी रखड़ी बैठ घड़ा ज्योजी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे काना में कुण्डल ल्याज्यो
म्हारी नथ में मोती पुवाज्योजी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे हाथा नै चुड़लो ल्याज्यो
संग लाल चूनड़ी ल्याज्योजी – म्हाँरे...

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
भात न्यूत आये अपने घर । काज संवारे सब खुश होकर ।।
कुलदेवी पित्तर जी ध्याया । मंदिर मैया का सजवाया ।।
पारसजी के भी ससुराल । निभा रहे सब रश्म रसाल ।।
बान मेल और हुई बनोरी । मंगल गीत निकासी होरी ।।
बदन बना का क्या ही कहना । घोड़ी के बाजे सब गहना ।।

बीन्द विनायक घोड़ी ऊपर । हो रही लूणराई बन्ने पर ।।
सर्व सुहागन गीत उचारे । घोड़ी के तो ठुमके न्यारे ।।

घोड़ी नांचत ताल पर, निरख रहे नरनार ।
सब ही शगुन मना रहे, बन्ना बहुत सुप्यार ।।८।।

घोड़ी गीत

तर्ज : इचक दाना, बिचक दाना...

ठुमक ठुमक घोड़ी नाँचे घोड़ी का क्या कहना, ठुमक...
झन् झन् झन् झन् गहना बाजे गहनो का क्या कहना, ठुमक...

घोड़ी पै बैठा है इक दूल्हा राजा
शहनाई बाजे बजे बैण्ड बाजा
ओSSSS काजु मेवा चूगो चुगावे
चुगने का क्या कहना ठुमक - २...

गहनो कि धुन से जो संगीत बजता है
सोया हुवा दिल का नजराना जगता है
ओSSSS घोड़ी के संग सखियां नांचै
नचने का क्या कहना ठुमक - २....

बन्ने का जीजाजी घोड़ी निहारे
प्यारी सी बहिने भी नजर उतारें
ओSSSS वारी फेरी करै लुटावै
लुटने का क्या कहना ठुमक -२...

मंदिर से सब आयके, मित्र घर दियो मुकाम ।
आयेगा बनड़ा-बहु घर में, गठ जोड़े को थाम ।।९।।

रथ घोड़े और बगिया, सज धज सभी उमंग ।
जिस वाहंन के लायक जो, बैठे आदर संग ।।१०।।

पितृ देव गणपती मनाय, चलि बारात उत्साव ।
भाव शरीर से सभी चलो, श्री सावा के गांव ।।११।।

उहाँ फतेहपुर में खुशी, बैठाया शुभ बान ।
हल्दीगीत लुगायां गावै, आवै मधुरी तान ।।१२।।

हल्दी गीत

हल्दी को रंग सुरंग निपजै मालवेजी
कंचन वरणी केशरीजी, आये बहुत सुगंध निपजे...
या हल्दी विनायक जी मुलाई, रिद्धि सिद्धि के मन फोड-निपजे...
या हल्दी सब देव मुलाई, सगली देव्या के मन कोड-निपजे...
या हल्दी थारा ताऊजी मुलाई, ताईजी के मन कोड-निपजे...
या हल्दी थारा बापूजी मुलाई, मायड़ के मन कोड-निपजे...

तेलबान की रश्म हुई, कांगन डोरी बंधाय ।
बान कढ़ाया ताई चाची, घर में खुशी मनाय ।।१३।।

पारस को बैठा दई, मामो गोद लिवाय ।
बनड़ी गावै साथिया, स्वर संग साज सजाय ।।१४।।

गीत बनड़ी

बाई नै बनड़ी बणावां पारसनै सजावां ।
आवो आवो ए सहल्यो आपा चाँव से ।।

शीश रखड़ी पहनावां सोने की मांग सजी जद फीणी गमकी
लाल बिंदिया लगावां सांचा मोती सजावां - आवो आवो...

भोंवा भोडल सु चमकाई मोद भरयो अखियाँ उभरयाई
नैणां काजलिया रमावां काना झुमका पहनावां, आवो आवो...

नाँक सूवैसी मै नथली घाली चाँव चढी होठारी लाली
कपोल लुभावाँ लाली जोत जगावाँ, आवो आवो...

नौलख हार गले बिच सौहे बाजुबंद चूडलै नै मोहै
तागड़ी तो बंधावा बींटी नाम की पहनावां, आवो आवो...

हाथ सज्या हथफूल सुहावै नूवांरी लाली नै झाला देवै
सिणगार सजावाँ सागै बनड़ी भी गावां, आवो आवो...

गौरे पगल्यां में पायल पहनाई अंगुलिया मै बिछिया सजाई
रुण झुण घुंघरू बजावां मंगल गीत सुनावां, आवो आवो...

आई बारात फतेहपुर मे, पारस का जहं ब्याव ।
नाई जाकर दई बधाई, सुनकर बढा उछाव ।।१५।।

जनवासे को आगये, समधी ले सत्कार ।
दोनो पक्ष मगन हुए, पग पग पर मनुहार ।।१६।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
समधी हु समधी गले मिले है । मनके आंगन फूल खिले है ।।
मंगसिर बदि सप्तमी पावन । सूर्योदय का समय सुहावन ।।
सबके मन मे खुशी समाई । हुई ईक्कठी सभी लुगाई ।।
डेरा निरखन हुई रवाना । संगले गीतों का नराजाना ।।

गुल बनड़े की सुरत निहारी । हुई प्रशंन सुहागन नारी ।।
जनवासे ते सब घर आये । भत्ती भात चूनड़ी लायें ।।
भात भरण की बेला आई । कोयल कंठ लुगायां गाई ।।

गीत भात लेना का

बागां मैं बाज्या जंगी ढोल शहरा मै बाजा बजिया जी
आयो मेरी मां को जायो बीर चुनड़ ल्यायो रीझकी जी
मेलूँ तो डाबी भर ज्याय तोलू तो तोला तीसकी जी
नापूं तो हाथ पचास परखू तो विश्वा वीसकी जी
ओढूँ तो शहर सराये साजन आवै मुलकत जी
धन है गौरी थारो भाग बीरोजी ल्यायो चूनड़ी जी

चांक पूच लिया चाँव से, मंगल घट थरपाय ।
कोरथ देकर आगये, सब पुलकित हरसाय ।।१७।।

जनवासे हू सज चले, दूल्हा और बारात ।
घोड़ी नांचै पंछी चहके, धानुका धन बरसात ।।१८।।

होनहार बिरवान के, होत चीकने पात ।
होनहार ने क्या किया, आगे सुनिये बात ।।१९।।

सावा के घर में मंगल, और मंगल ससुराल ।
तृतीय स्कंध पुरा हुआ, आगे का लख हाल ।।२०।।

–: इति तृतीय स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: चतुर्थ स्कंध :

सतीत्वं सतीरूपास्त्वं त्वमेव दु:ख हारिणी ।
तारिणी दुर्ग संसार: ज्योति रूपा नमोऽस्तुते ।।

: भाषा टीका :

हे सावा शक्ति दादी आप ही शक्ति हो सती रुप हो
अपने भक्तो के सब प्रकार के दु:खो को हरने वाली हो
संसाररूपी सागर से तारनेवाली हो आपही ज्योति पूंज हो
हम सब आपको नमस्कार करते है ।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
आनंद दोना पक्ष मनाया । होनी अपना जाल बिछाया ।।
बींद बराती अति प्रशंन है । सकल काफिला राजी मन है ।।
डाकू निकट गांव का आया । संग मे अपनी टोली लाया ।।
दूल्हा और बरात को देखा । विधि प्रेरित कर्मो का लेखा ।।
धन दौलत वो बहुत निहारी । डाकू दल की मति बिसारी ।।
छीन लिये गहने बरात के । कंठाभूषण और हाथ के ।।
दूल्हे का श्रृंगार लुभाया । डाकूदल लालच मे आया ।।

जब दुल्हे की और बढे, डाकू सब मिल साथ ।
सकल बराती जोश भरे, है एतिहासिक बात ।।१।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
उठा लिये अपने हथियार । बरछी भाले और तलवार ।।
दूल्हा बरातियों की सेना । लड़े लड़ाई क्या ही कहना ।।
चमक रही तिरछी तलवारे । मारो काटो सभी उचारे ।।
डाकू उतर अश्व के नींचे । क्रोधित होंय जबाड़ी भींचें ।।
दूल्हे को जब पकड़ लिया है । पीछे से आ जकड़ लिया है ।
कीन्हे एक साथ सब वार । भाला हुवा कलेजे पार ।।
दूल्हा बड़ी शान से सह गया । वीर गती को वीर पागया ।।

वांशल गोत्री धानुका, वीर का हो गया अंत ।
माया ये जिसने रची, वो है बड़ा अनंत ।।२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
घटना के दर्शक कुछ आये । सावा के घर खबर कराये ।।
समाचार अनहोनी का सुन । सन्नाटा छाया बदली धून ।।
स्वयं सम्भल पाया नही कोई । सावा की मां आँख भिगोई ।।
परिजन पुरजन रहे निहार । सबही के मन दुःख अपार ।।
सावा अपनी मां से कहती । सतिनारी पति के संग रहती ।।
जन्म जन्म का साथी मेरा । हे माता दामाद वो तेरा ।।
सति होवूंगी उनके संग । पारस परमेश्वर के संग ।।

रोम रोम मे सावा के, शक्ति गई समाय ।
सावा दुल्हन बनी हुई, पास पती के जाय ।।३।।

मतजा मतजा सुण पारस सुरज्ञान
तु सावा चढ़ेड़ी है मतजा ए कहणो मान

चढ़गा चढ़गा ईबतो तेल बान
कोई काँगन डोरी भी बंधी है तेरे हाथ

उजड़यो उजड़यो पारस तेरो सुहाग
धाड़ेती बैरी लेय लिया ए बांका प्राण

पारस कहे माँ पति परमेश्वर होय
म्हे जास्यां उनके साथ मतरोको मेरी मात

रोम रोम में शक्ति गई समाय
पारस इब रोकी ना रूकै ए मंगल मान

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सावा दृष्य देख मनलाई । पति परमेश्वर के सन आई ।।
दिखा है भाला सिने में जब । ज्योति नही नगीने में अब ।।
पति को गोदी बीच सुलाया । मस्तक को अंतिम सहलाया ।।
दुःख कलेजे में गहराया । पारस चँडी रुप बनाया ।।
सिंह को प्रगट किया जंगल में । हर हर महादेव मंगल में ।।
सावा चढी सिंह के ऊपर । साजन की तलवार लई कर ।।
सावा ने तलवार चलाई । डाकू दल सारा घबराई ।।

ज्यो दामिनि की चपलगति, त्यो चल रही तलवार ।
सावा शक्ति लड़ रही, रणचण्डी अवतार ।।४।।

तड़ तड़ तड़ित गति से तीक्ष्ण किये प्रहार ।
कड़ कड़ कड़के विधुतसम, मारे दृष्ट हजार ।।५।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
उग्र हुई है बनकर ज्वाला । दुष्टों को तमाम कर डाला ।।
मुण्ड विहिनम झुण्ड बिछाया । रण चण्डी बन शोर्य दिखाया ।।
सावा मां अति रक्त रंजित । सजी सिंह पे लगे सुशोभित ।।
चहूँ ओर सन्नाटा छाया । डाकू दल मुखिया चकराया ।।
मुखिया दोनों जोड़े हाथा । चरणों में धर दीन्हा माथा ।।
होनी को पहिचान लिया है । पारस उसको माफ किया है ।।
फिर सबको आदेश दिया है । निज कुल में सन्देश दिया है ।।

चन्दन लकड़ी लाईये, चित्ता करो तैयार ।
निज सुहाग के साथ मे, जाना परली पार ।।६।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
श्री सावा गई पति समीप । जगा हृदय मे सत्का दीप ।।
मुख मण्डल पर तेज सुहाना । अन्तर प्रेरित पति संगजाना ।।
इन्द्र देवता जल बरसाई । पारस पति को स्नान कराई ।।
गांव नगर में चर्चा होगी । गृहस्थी भी आये अरू जोगी ।।
जो हाजर वो फर्ज निभाया । चन्दन लकड़ी श्रीफल लाया ।।
वहां काफिला जुट गया भारी । चित्ता सजाई पूर्ण तैयारी ।।
पूजा अग्नि रथ की कीन्ही । शिव गोरी ने साक्षी दीन्ही ।।

सात लगाई परिक्रमा, सुद्ध बुद्ध दीन्ही खोय ।
मन की चाही ना होवै, हरि इच्छा सब होय ।।७।।

अग्नि रथ पर बैठकर, ले पति काया गोद ।
सुख दुःख सारे मोन हुए, हुवा ब्रह्म का बोध ।।८।।

स्वतः होगया गठ जोड़ा, नहीं लगाया हाथ ।
हाथ जोड़ पारस बोली, सूर्य देव देवो साथ ।।९।।

सूरज से प्रगटी किरणे, लगी चित्ता मे आग ।
पंच तत्व पावन हुए, फैला पून्य पराग ।।१०।।

सिन्दुरी रंग की उठी, लपटें लाखो लाख ।
आये सारे देवता, भरने उनकी साख ।।११।।

उसी समय सबने देखा, चमत्कार साकार ।
सावा देवी के कुचन से, बही दूध की धार ।।१२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सवंत था सोलह सो सत्तर । मंगसिर बदि अष्टमी बेहतर ।।
दोनो कुल को धन्य किया है । सावा अग्नि स्नान किया है ।।
छः बजकर एक मिनट सुहाई । परम दिव्य ज्योति प्रगटाई ।।
सकल देवता नभ में छायें । होय प्रशंन पुष्प बरसाये ।।
कोई शोक नही करना भाई । सावा ने आशिष सुनाई ।।
फलो फूलो ज्यू वंश धानुका । पीहर और ससुराल धानुका ।।
अनधन लक्ष्मी घर मे आसी । दिग्पाली दुःख दूर भगासी ।।
सावा सती नाम से म्हारी । पूज कर फल ले संसारी ।।

पारस देवी अग्निरथ पर, चढी फतेहपुर धाम ।
सावा नाम से कीर्ती कलश, सेवक करे प्रणाम ।।१३।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सब के उर आनंद सवाया । सुन्दर सा मंदिर बनवाया ।।
पश्चिम दिशि मे मुख्य द्वार है । पूर्व नागेश्वर शिव दरबार है ।।
शिवजी दुर्गा लक्ष्मी राजे । संकट मोचन वही विराजे ।।
प्राचिन मुख्य द्वार दक्षिण मे । राणीसती निहारे क्षण में ।।
श्रीराणी सति के मंदिर से । सावा का रस्ता अन्दर से ।।
पीतरजी अरू देवता बाबा । मंड के दाहिने उनकी आभा ।।
मंदिर मे एक नीम खड़ा है । सावा के सन हुवा बड़ा है ।।
गढ गुम्बज पे ध्वजा फहराई । विधि से पूजा पाठ कराई ।।
नित प्रति होवे वहां आरती । सब की किस्मत माँ सवारती ।।
आने जाने लगे जातरी । भक्तों के मन पूरी-खातरी ।।
जब जब भादो मावस आती । मेला भरत जगत जस गाती ।।
लक्ष्मीनाथ बाबा वहां राजे । नगर फतेहपुर मंदिर साजे ।।

श्रद्धा भाव सहित पढे, यह चोथा स्कंध ।
मनो कामना पूर्ण हो, कटे दु:खो का फंद ।।१४।।

-: इति चतुर्थ स्कंध :-

गोविन्द मेरा है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: पंचम स्कंध :

योगमाया योग रूपा शिवा भस्मी शुभंकरी
मंगला मंगली धारा रक्षा सुत्र प्रदायिनी

: भाषा टीका :

सावा शक्ति दादी योग माया है योगरूपा है
उसकी भस्मी कल्याण करने वाली है
उसका रक्षा सुत्र जो धारण करता है
उसके जीवन में सर्वदा मंगल होता है मंगल जलधारा से
उसका जीवन पवित्र होता है ।

किस्मत वाले होते है, जो मां की महिमा गाते है ।
लिखा नही जो किस्मत में वो, माँ से सब पाजाते है ।।१।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सति कि भस्मी शिव मन भाई । दक्ष यज्ञ मे सती समाई ।।
ये भस्मी संतन सिरधारी । सुखी हुए सारे संसारी ।।
बालक को दे यही भभूती । भूत पिशाचिनी नहीं सताती ।।

अपने घर में मैया की, रख्यो भस्मी संभाल ।
रोग शोक सब दूर करे, मैया करें निहाल ।।२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
चरणामृत अमृत कर जान । माँ का जल है पून्य महान ।।
सर्वरोग नाशक जल मां का । माँ के जल की विमल पताका ।।
प्रात: काल जो यह जल पीवे । माता की ममता में जीवें ।।

जल की महिमा अमित है, कह गये वेद पुराण ।
सावा सति का जल लिये, निश्चय है कल्याण ।।३ ।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
राखी माता की बन्धवावे । कर्म बंधन से मुक्ति पावे ।।
जो बन्धवाया रक्षासूत्र । गोद खिलाया उसने पुत्र ।।
जब से रक्षा सूत्र चला है । हर प्राणी का हुआ भला है ।।

बलिराजा के महल मे, विष्णु पहरेदार ।
कारण रक्षा सूत्र के, हुवा विष्णु उद्धार ।।४ ।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सावा का श्रृंगार सजावो । अपना जीवन सफल बनावों ।।
जो सावा को सदा संवारे । उसका जीवन मात संवारे ।।
फूलो का श्रृंगार सुहाना । लाल फूल को भूल न जाना ।।

अपने इन हाथो से कर, मैया का श्रृंगार ।
नयनों से तू दर्शन कर, मुख से जय जयकार ।।५ ।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
मां को चुनड़ी लाल उढावे । उसको सावा कवच पहनावे ।।
काल भी क्या सकता उसका । चुनड़ी मे मन बसता जिसका ।।
तार तार मे सत् का तप है । इसमें अग्नि धरा जल नभ है ।।
पंच तत्व की यह परछाई । इसकी महिमा वरणी न जाई ।।
जिसने इसकी महिमा जाणी । अमर हो गई उसकी वाणी ।।
चुनड़ी का रंग शक्ति सुरंगा । चुनड़ी यमुना चुनड़ी गंगा ।।

चुनड़ी बिन संसार का, सूना है श्रृंगार ।
जैसे ईश्वर प्रेम की, भक्ति है आधार ।।६।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
रोली मोली अक्षत लीजै । मेहन्दी से माता बहु रीझे ।।
दुर्वा सुमन सुगंधित लाय । धूप दीप नैवेद्य लगाय ।।
लवंग इलायची पान सुपारी । श्रद्धा भाव सहित है प्यारी ।।
चुड़ो बिन्दिया लाल चढावै । पुत्र पति की रक्षा पावै ।।
मन मे भाव रहे नही दूजा । करो नित्य माता की पूजा ।।

सर्व मंगला सावा माँ, नथ पहिने त्रिशूल ।
नयन मूंद कर देखिये, सजे सुहाने फूल ।।७।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
परम दिव्य सिंहासन तेरा । अटल छत्र भी छट्टा बिखेरा ।।
सूर्य चन्द्र बलिहारी जाये । चूनड़ कोटिक नखत सराहें ।।

भाल सुशोभित बिन्दिया नीकी । कबहु मेहन्दी पड़े ना फीकी ।।
मां सावा शक्ति मन लाई । प्रेम सहित मंगल करवाई ।।
सदा दिवाली उसके रहती । जिस घर में सावा की ज्योति ।।
रोग दोष अघ शोक नसावे । सुत धन धान्य आयु सुख पावे ।।
प्रतिदिन या मावस को गावे । परम प्रसन्न सावा हो जावे ।।

सावा मंगल पाठ से, सुधरे सारे काम ।
तनकी सब व्याधा टरे, मन पाये विश्राम ।।८।।

सावा सती दादी मेरे, मनको मगन बणाय ।
भाव सुमन दिन्हे चढा, चरणों शीश नवाय ।।९।।

सदाशरण में राखियो, सावा मेरी माय ।
सेवक की सुन प्रार्थना, करियो नित्य सहाय ।।१०।।

जय जय जय श्री सावा शक्ति, मैया ज्योति स्वरूप ।
दुख हरणी मां सुखकरणी, रहो भक्त अनुरूप ।।११।।

मंगल महर माँ नित्य करो, दीजै भूल सुधार ।
सौम्य भाव से सावा मां, मेरी ओर निहार ।।१२।।

-: इति पंचम् स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा सती चालीसा

सद्गुरू चरण कमल नवू, पदरज चित्त मे धार ।
आँखो में मां छवि बसा, मन दर्पन हु सुधार ।।

गणपति सरस्वती विष्णु, शिव ब्रह्मा धर ध्यान ।
मां सावा की ज्योति का, करहु नित्य गुणगान ।।

जय मां सावा शक्ति सुहावन। चरित तुम्हारा है अति पावन।।
परम पूज्यनिय मंगल दाता। भक्त वत्सला भाग्य विधाता।।
मात पिता की सुता सुजान। पारस परमेश्वरी महान।।
संकट विकट मोचनी माई। सब संताप विमोचनी माई।।
करूणा सागर कृपा निधान। रूप दिव्य है गुण की खान।।
शेखावाटी है बड़ भागी। मरूधर देश में ज्योति जागी।।
शिखर बंद सत बना सेवरा। बना फतेहपुर प्रमुख देवरा।।
सर्व मंगला मां कल्याणी। धाम फतेहपुर आप धिराणी।।
तीन ताप अरू संकट हरणी। कष्ट निवारिणी मंगल करणी।।
सकल संपदा की तुम दाता। जय जय जय श्री सावा माता।।
सरस सौम्य मां सुन्दरताई। कही न जाय मनोहर ताई।।
दुर्गा, दादी, अम्बा कहिये। चरण शरण कर जोड़े रहिये।।
तेजोमयी मात है ज्वाला। समरांगण में रूप निराला।।
रणचण्डी बन शोर्य दिखाया। डाकू दल का किया सफाया।।
सति सत से अग्नि प्रगटाई। सत्य लोककी चमक बढाई।।
जब जब भक्त पुकार लगाई। गगन देव दुंदुभी बजाई।।
भक्तन घर आभा छिटकाई। दास जनो की करें सहाई।।
सावा दादी बहुत उदार। सेवक जन की लख दातार।।
कलियुग के सब दोष नशावन। सावा शक्ति जन मन भावन।।

पारसदेवी जग विख्याता। जयति जयति सति दादी माता।।
परम दिव्य मां मरूधरवाली। वंश धानुका तारणवाली।।
नयना काजल बिंदिया नीकी। कबहु मेहन्दी पडे न फीकी।।
नथ की आभा लगे सुप्यार। मुख मण्डल छायों उजियार।।
सत् की लाल चूनड़ी साजे। हस्त कमल त्रिशूल विराजे।।
सूर्य चन्द्र तारागण गाये। लाल चुनड़िया देव सराहे।।
सहज सुभग सुन्दर श्रृंगारा। रति मति पाये नही पारा।।
वंश धानुका किरती पाई। किया उजागर कुल को माई।।
अमर सुहागन मां की ज्योती। पति परमेश्वर नथ का मोती।।
स्वस्तिक पूजन लाभ प्रदाता। जय जय हम बालक की माता।।
जो मैया के शरणे आये। सावा उनकी लाज बचाये।।
नित प्रशंता देवे माता। नाव अटकती खेवे माता।।
सावा चढ पारस नही ब्याई। एहिते सावा सती कहाई।।
अपने सेवक आप निहारे। बिन बोले सब काज सुधारे।।
है मुस्कान अमीरस धारा। तेज पूंज जाने संसारा।।
दु:ख दुरमति माँ दूर भगावे। सुख, समृद्धि प्रतिष्ठा पावे।।
सावा सोया भाग जगावें। पारस सत् का संग करावें।।
कदम कदम पर मां प्रतिपाल। भरे भण्डारा करे निहाल।।
मनसे करे जो पाठ चालिसा। घर में खुशिया ठाठ आलिसा।।
मनोकामना पूरनवारी। वर दो खुश होकर महतारी।।
नित नव 'मंगल' कर हितकरी। रहत धानुका शरण तिहारी ।।

दोहा

जय जय मां सावा सती, सदा आनंद स्वरूप ।
भक्तो पर मां कृपा करो, बालकहित अनुरूप ।।

श्री सावा शक्ति माता की आरती

जय सावा शक्ति मैया जय सावा माता
सेवक जन प्रतिपाली सुख समृद्धि दाता ।।

धाम फतेहपुर तेरा अति पावन प्यारा
दर्शन कर जन मन में बहती सुखधारा ।।

छवि त्रिशुल नथ सोहे स्वस्तिक तव पूजा
चमके चुनर सत् से भाव नहीं दूजा ।।

शुभ सुहाग सामग्री माँ तेरे भेंट धरे
चुड़ो बिदिंया महेन्दी जय जयकार करें ।।

मंदिर में नागेश्वर शिव महादेव सती
लक्ष्मी, संकट मोचन श्री हनुमान जती ।।

वैश्य, धानुका वंश में कृपा करी दाता
बांसल गोत्र उजागर धन्य पिता माता ।।

पारस सावा चढकर शक्ति रूप लिया
सति लोक मे सावा सत् सरनाम किया ।।

अनधन वंश बढावे सुख भण्डार भरे
भक्तो पर मां सावा निश्चय कृपा करे ।।

सावा शक्ति की आरती जो कोई गाता
दर्शन कर मैया से मंगल वर पाता ।।

श्री हनुमान जी की नई चमत्कारी आरती

ॐ जय हनुमान हरे प्रभु जय हनुमान हरे सब भक्तों के हनुमत पूरण काम करे
ध्यावत ही फल पावत संकट दूर करें धर्म मोक्ष अरू वैभव सुख भरपुर करें
लाल सुरज मुख लिन्हो लाल लाल लंगरे लाल ध्वजा अरू घोटा हस्तकमल विचरे
अष्ट सिद्धीयां देवत नव निधि प्रदत करें राम भक्त कहलायें संतन सहाय करें
सीता की सुधि लाये धक् धक् लंक जरे मुर्छित हो गये लक्ष्मण उनके कष्ट हरे
देवी विग्रह समाये अहिरावण उखरे राम लखन जग लाये राम राम उचरे
श्री हनुमानजी की आरती भाव सहित उच्चरे मंगल मुर्ति हनुमत अनुग्रह सब सुधरे

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की दृष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।
जांके बल से गिरवर कांपे, रोग दोष जांके निकट न झांके ।।
अंजनि पुत्र महा बलदायी, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुध लाये ।।
लंका–सो कोट समुद्र–सी खाई, जात पवनसुत वार न लाई ।।
लंका जारि असुर सब मारे, सियाराम जी के काज संवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पडे सकारे, आन संजीवन प्राण उबारे ।।
पैठी पाताल तोरि यम कारे, अहिरावण की भुजा उखाडे ।।
बाँये भुजा असुर दल मारे, दाहिनी भुजा संत जन तारे ।।
सुर–नर मुनिजन आरती उतारे, जय जय जय हनुमान उचारे ।।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अन्जनी मांई ।।
जो हनुमान जी की आरती गावै, बसि बकुण्ठ परम पद पावै ।।
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीर्ती गाई ।।
आरती किजै हनुमान लला की, दृष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।

पुष्पांजली

मरूधर राजस्थान को, कण कण गावै नाम ।
मनस्या पूरो मावड़ी, जय जय जय सुखधाम ।।

श्रद्धा भाव सहित आयो, माई करो निहाल ।
पग-पग पर रक्षा करो, भग्तां की प्रतिपाल ।।

सेवक की सुन प्रार्थना, नाव पड़ी मझधार ।
दुःख सागर से पार कर, मैया खेवन हार ।।

ज्यादा कछु मांगु नहीं, मांगु यह वरदान ।
मेरे छोटे से परिवार का, रखियो पुरा ध्यान ।।

कृपा दृष्टि माता रखना, हरदम रहना साथ ।
अपने सेवक के सदा, रखियो सिर पर हाथ ।।

मंगल महर माँ नित्य करो, दीजे भूल सुधार ।
सहज भाव से माँ सावा, मेरी और निहार ।।

रोग दोष दुःख दरिद्रता, सारा कष्ट कलेश ।
मेरी सब व्याधा हरो, करियो कृपा हमेश ।।

शरणागत हूँ राखियों, निज आँचल की छांह ।
आनंद मंगल कारिणी, गहियों मेरी बांह ।।

सुमन सुगंधित सुमन ले, सुमन शुभक्ति सुधार ।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, मां सावा करो स्विकार ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव ।।

यानी कानि च पापानी, ज्ञाता ज्ञात कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे पदे ।।

माता श्री सावा सती की जय